दैनिक जागरण, भोपाल 13 MAY 2010

मंगल के नाम पर भी दंगल!

विशेष सत्र बहिष्कार के कांग्रेस के फैसले पर सवालिया निशान लगा रहे हैं **महेश श्रीवास्तव**

भजन तो हम बहुत करते हैं- 'मंगल भवन, अमंगल हारी,' मगर जब मंगलवार को मंगल करने और अमंगल हरने का संकल्प लेने के लिए विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने की बात हुई तो दंगल हो गया। जनता को पहले ही कम भरोसा था कि दंगल के घर में सब मिलकर मंगल गीत गाएंगे। कांग्रेस ने सत्र का बहिष्कार कर जनता की शंका को सिद्ध कर दिया। कांग्रेस को जन के उत्थान, प्रदेश से अपनेपन की शान और विकास के कीर्तिमान से सरोकार नहीं। शिवराज के स्वर्णिम मध्यप्रदेश के संकल्प से कांग्रेस ऐसे भड़की जैसे शिवराज मध्यप्रदेश को स्वर्णिम नहीं लंका को सोने की बनाने का संकल्प पारित करवा रहे हों। कांग्रेस ने विशेष सत्र का बहिष्कार कर दिया। शिवराज ने प्रदेश के विकास के लिए सुर से सुर मिलाने का बहुत प्रयास किया- 'मिले सुर तुम्हारा हमारा,' मगर ससुर, सुर को न मिलना था न मिला। विधानसभा में मेघ मल्हार तो शुरू हुआ मगर तानपूरा नदारद रहा। बातों की खाने वाले बात करने से मुकर गए। बात अपनी थी, अपनों की, अपने प्रदेश की होना थी। लोकतंत्र में जनता चुनती ही इसलिए है कि आप जन के मन और प्रदेश के उत्थान की बात करें। कोप भवन में बैठने वालों के लिए विधानसभा भवन नहीं होता है। स्वर्णिम मप्र पर मिलजुलकर बात करते, सुझाव देते तो विधानमंडल के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय लिखते। जहां अक्सर ताण्डव हो जाता हो वहां लास्य भी हो यह कांग्रेस ने स्वीकार नहीं किया। शिवराज ने मनुहार की, स्वर्णिम प्रदेश के लिए सोनिया को पाती भी लिखी, मगर न सोना पिघला, न कांग्रेस का मन। किसी शायर की दो पंक्तियां गूंजती रहीं-

"बैठ तो तू साथ, सबसे बात तो तू कर
रह खफा मुझसे मगर, सबसे घृणा मत कर"

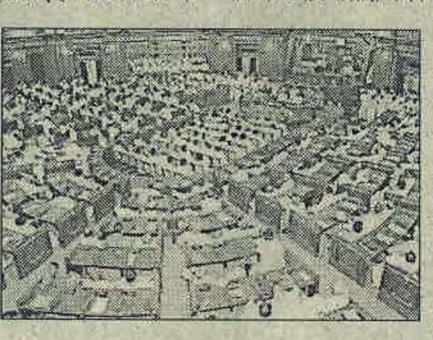

शिवराज की पुकार अनसुनी रही। दलगत राजनीति की दलदल कम नहीं हुई और प्रदेश की सबमें बड़ी पंचायत के पंच प्रपंच में फंस गए। उन्हें सुविधा है यह पूछने की कि कितनी ऊंची और करूं आवाज बताओ? बात सरकार की नहीं जन सरोकार की थी। मगर कांग्रेस ने बहिष्कार की घोषणा कर दी सो कर दी। 'प्राण जाहि पर वचन न जाही' बसपा ने भी अपनी पूंछ बिदकी हुई कांग्रेस के साथ नत्थी कर दी।

ना- ना करते प्रेम हो जाने की घटनाएं तो इतनी घटती हैं कि उन पर फिल्मी गाना बन जाता है। किन्तु हां-हां करते हरजाई हो जाने की घटनाएं कम सुनी जाती हैं। कार्यमंत्रणा परिषद में हां करने के बाद कांग्रेस हरजाई हो गई। उसका कहना है कि नेता प्रतिपक्ष की स्वीकृति की बात गलत बताई गई। अब एक तो जमुनादेवी वयोवृद्ध, तिस पर बीमार और स्वभाव से जन्मजात भोली। किसी ने पूछा होगा प्रदेश के विकास की बात करने के लिए विशेष सत्र करना है तो उन्होंने कह दिया होगा करो। किसी ने कहा होगा इससे कांग्रेस को राजनीतिक नुकसान होगा तो उन्होंने कह दिया होगा- अलग हो जाओ। बुआ भोली है और उनकी हां और ना रूपांतरित होती रहती है। यह हम तब भी देखते थे जब वे दिग्विजय सरकार में मंत्री थीं। इसलिए मान लेते हैं कि भाजपा भी सही और कांग्रेस भी सही। किन्तु इस घटनाक्रम में ऐसा लगा जैसे कांग्रेस ने पहले 'कबूल' कर निकाह किया और सुहागरात के पहले ही तलाक दे दिया। तलाक दिया है तो तलाक के कारण भी बताए जा रहे हैं। मसलन विशेष सत्र संविधान विरुद्ध है। प्रश्न उठता है कि संविधान विरुद्ध है तो संविधान के रक्षक राज्यपाल ने सत्र आहूत क्यों किया। फिर मप्र को स्वर्णिम बनाने की बात हो तो संविधान क्यों आड़े आएगा। कानून मनुष्य बनाता है मनुष्य जीवन की श्रेष्ठता के लिए। कानून के लिए मनुष्य नहीं बनता और श्रेष्ठ जीवन के मार्ग में आने वाला कानून बदला भी जाता है। फिर भी यदि कोई संवैधानिक कांटा चुभ ही रहा है तो कांटा दर किनार करना चाहिए, पैर काट कर फेंकने की बात नहीं सोचना चाहिए। माना भ्रष्टाचार है मगर कब नहीं था? माना बिजली और पानी का संकट है मगर कब नहीं था? इन्हीं से मुक्ति पाने के उपाय तलाश करने और प्रदेश को प्रगति मार्ग पर ले जाने के सुझाव मांगने के लिए तो यह सत्र था। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण और बिजली पानी की समस्या के निवारण के बिना तो प्रदेश स्वर्णिम बन भी नहीं सकता। शर्त थी तो यह कि इनका उल्लेख तो करें मगर सुझाव भी दें और उपाय भी बताएं। पता नहीं कांग्रेस के पास सुझाव थे या नहीं मगर उसका जोर आलोचना पर और वह भी स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से करने का रहा। आलोचना और स्थगन के लिए साल भर में कई अधिवेशन हैं। स्थगन ही हो जाता तो विशेष सत्र बुलाने के अर्थ का ही अंत हो जाता। सब अपनी बात पर अड़े रहे। कांग्रेस का बहिष्कार भी हुआ और विशेष सत्र भी हुआ।

कांग्रेस को विकास से शिकायत होगी यह कोई नहीं कहता मगर विकास के संकल्प के साथ भाजपा और शिवराज को जो लोकप्रियता मिल रही है वह उसके लिए खतरे का संकेत है। वैसे भी मप्र में कांग्रेस बिल्लियों के झगड़े में पड़ी है और उनकी दृष्टि में बंदर का भला हो रहा है। शिवराज नामक डाकिया घर-घर जाकर लोगों से अपने मध्यप्रदेश के लिए प्रेमपत्र लिखवा रहा है और जनता को अपने प्रदेश से तो प्रेम है ही शिवराज से भी प्रेम होता जा रहा है। ऐसा चक्र चलाया कि कांग्रेस गफलत में आ गई और स्वर्णिम प्रदेश के संकल्प की सोने की दरांती उसके गले में अटक गई है। न निगलते बनती है न उगलते। स्वर्णिम प्रदेश के संकल्प का साथ दे तो यह सवाल कि इतने सालों राज किया तब संकल्प क्यों नहीं किया। श्रेय शिवराज को मिलेगा सो अलग। बहिष्कार किया है तो यह सवाल कि क्यों नहीं है जनता और प्रदेश के विकास से सरोकार। कांग्रेस ने बहिष्कार कर कुएं और खाई में से एक को चुना है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)